भौम प्रदोष व्रत कथा PDF

एक समय की बात है। किसी नगर में एक बुढ़िया रहती थी। उनका एक ही बेटा था। वृद्धा की हनुमानजी में गहरी आस्था थी। वह प्रत्येक मंगलवार को व्रत रखकर हनुमानजी की पूजा करती थी। एक बार हनुमानजी ने अपनी भक्त बुढ़िया के विश्वास की परीक्षा लेने की सोची।

हनुमानजी साधु का भेष बनाकर उस बुढ़िया के घर गए और पुकारने लगे– क्या कोई हनुमान भक्त है? हमारी इच्छाएँ कौन पूरी करेगा? आवाज बुढ़िया के कानों तक पहुंची। पुकार सुनकर बुढ़िया झट से बाहर आई और ऋषि को प्रणाम करके बोली– हे प्रभु!
हनुमान वेशधारी साधु ने कहा– मैं भूखा हूं, भोजन करूंगा, आप मुझे कुछ जमीन दे दीजिए।
बुढ़िया दुविधा में थी। अंततः उसने हाथ जोड़कर कहा–महाराज! कूदने और मिट्टी खोदने के अतिरिक्त यदि आप कोई और आज्ञा देंगे तो मैं उसे अवश्य पूरा करूंगा।

तीन बार प्रतिज्ञा करने के बाद साधु ने कहा– अपने बेटे को बुलाओ। मैं उसकी पीठ पर आग जला कर खाना बनाऊंगी। यह सुनकर बुढ़िया डर गई, लेकिन वह दृढ़ थी। उन्होंने अपने पुत्र को बुलाया और ऋषि को सौंप दिया।

साधु वेशधारी हनुमानजी ने वृद्धा की सहायता से उसके पुत्र को पेट के बल लिटाया और उसकी पीठ पर अग्नि जलाई। आग जलाने के बाद बुढ़िया दुखी मन से अपने घर चली गई।

इधर भोजन बनाने के बाद साधु ने बुढ़िया को बुलाया और कहा– उसका भोजन तैयार है। तुम अपने बेटे को बुलाओ ताकि वह भी आकर खाना दे। इस पर बुढ़िया बोली– उसका नाम लेकर मुझे और परेशान मत करो।

लेकिन जब साधु महाराज नहीं माने तो बुढ़िया ने अपने बेटे को आवाज लगाई। वह अपनी मां के पास आया। अपने पुत्र को जीवित देखकर बुढ़िया को बहुत आश्चर्य हुआ और वह ऋषि के चरणों में गिर पड़ी।

तब हनुमानजी अपने असली रूप में प्रकट हुए और वृद्धा को भक्ति का आशीर्वाद दिया।

जो भी इस कथा का श्रवण ध्यान से करता है भगवान अवश्य ही उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी करते हैं।

बोलिए हनुमान जी की जय
बोलिए शंकर भगवान की जय

pdfinbox.com